

भीम गाथा BHEEM GATHA

संगीत, नृत्य, मंच, परिकल्पना एवं निर्देशन
विदुषी ऋता गांगुली

नाटककार
आसिफ अली

अभिमंच सभागार

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

13 तथा 16 मई 2023, सांय 6:30 बजे

14 तथा 15 मई 2023, दोपहर 3:00 एवं सांय 6:30 बजे



BHEEM GATHA

Playwright : Asif Ali
Costume Design : Dolly Ahluwalia Tiwari
Lighting Design : Souti Chakraborty
Music Arranger : Kajal Ghosh
Set Execution : Sagnik Chakraborty
Assistant Director : Meghna Kothari

**MUSIC, SET DESIGN, AUDITORIUM RESEARCH,
VIKRISHT MADHYAM AMBIENCE,
CHOREOGRAPHY,
DESIGN & DIRECTION: Prof. Vidushi Rita Ganguly**

**Abhimanch Auditorium
13to 16 May, 2023 at 6:30PM
Additional Show 14 & 15 May, 2023 at 3:30 PM**



भीम गाथा

आलेख	:	आसिफ. अली
वेशभूषा—अभिकल्पना	:	डॉली अहलूवालिया तिवीरी
प्रकाश—अभिकल्पना	:	सौति चक्रवर्ती
संगीत अरेंजर	:	काजल घोष
दृश्यबंध निष्पादन	:	साग्निक चक्रवर्ती
सहायक निर्देशक	:	मेघना कोठारी

संगीत, मंच परिकल्पना, सभागार अनुसंधान,
विकृष्टमध्यम परिवेश, नृत्य संयोजन,
परिकल्पना एवं निर्देशन : प्रो. विदुषी ऋता गांगुली

अभिमंच सभागार

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

14 तथा 15 मई 2023, दोपहर 3:00 एवं सांय 6:30 बजे

13 तथा 16 मई 2023, सांय 6:30 बजे

नाटक के विषय में

नाटक भीम गाथा का ताना-बाना पांडव भीम के इर्द-गिर्द बुना गया है, महाभारत के पात्रों में और अपने पांचों भाइयों में भीम एक ऐसा चरित्र है जिसके विषय में जन अवधारणा है कि वह मोटा है, पेटू है, बात-बात में क्रोधित हो जाता है, वह बलशाली तो है किंतु विवेक का अभाव है। भीम की यह जन अवधारणा उसे विनोदी चरित्र बना देती है। भीम की यह अवधारणा सर्वथा गलत तो नहीं किंतु पूर्ण सत्य भी नहीं है, यह पक्ष ही उसके व्यक्तित्व का मात्र पक्ष नहीं है। भीम के चरित्र के कई ऐसे अनछुए पक्षों को नाटक भीम गाथा के कथानक का अंग बनाया गया है।

नाटक भीम गाथा का भीम निष्ठावान है, आज्ञाकारी है, वह परिवार की रक्षा करता है, दृढ़ प्रतिज्ञा है, उसे उचित अनुचित का ज्ञान है, वह निर्बल की रक्षा के लिए उस सदा तत्पर रहता है, और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों का जोखिम भी लेता है।

नाटक का आरंभ दुर्योधन के षड्यंत्र और वारनावत के लाक्षागृह में आग लगने से होता है, भीम अपनी माता और भाइयों को लाक्षागृह की ज्वाला से निकाल बचा ले जाता है। अनायास मिले वनवास के यह वर्ष पांडवों के लिए दुष्कर तो थे किंतु इन्हीं वर्षों में आने वाले भविष्य की गाथा लिखी जा रही थी। यहीं भीम की मुलाकात वनवासनी हिडिंबा से होती है, भीम हिडिंबा के भाई हिडिंबा राक्षस को मार हिडिंबा से ब्याह रचाते हैं। अपनी जाति के विपरीत की जाति के प्रति स्नेह का यह भाव भीम के चरित्र का एक ऐसा पक्ष है जो अन्यत्र कहीं और देखने को नहीं मिलता, भीम न सिर्फ हिडिंबा से प्रेम करते हैं बल्कि उससे विवाह रचा वन में समय बिताते हैं और उन दोनों के संयोग से पुत्र घटोत्कच की प्राप्ति होती है, यही घटोत्कच बड़ा होकर महाभारत की लड़ाई में पांडवों के पक्ष से लड़ता है और अपना बलिदान देता है। हिडिंबा और भीम का प्यार अनोखा प्यार है,

जहाँ अपने और पराए, सजातीय और विजातीय का भेद मिट जाता है। भीम का हिडिंबा से प्यार और वन से उसका नाता टूट कर भी नहीं टूटता है।

धर्मराज युधिष्ठिर जुए में अपना सब कुछ हार जब द्रौपदी को दांव पर लगा देते हैं तब युधिष्ठिर का प्रतिकार भीम करते हैं, द्रौपदी को, केश से खींचने वाले दुशासन और अपनी जंघा पर बिठाने वाले दुर्योधन से प्रतिशोध का प्रण भीमसेन लेते हैं।

हिडिंबा के हृदय में भीम की ही छवि बसी हुई है, पुत्र घटोत्कच बड़ा हो रहा है, तभी वनवास भोग रहे भीम से अनायास उसकी मुलाकात हो जाती है, वो भीम को छाया मुखी दर्पण देती है और जानना चाहती है कि भीम के हृदय में क्या अभी भी वही वास करती है, भीम छाया मुखी दर्पण में जब स्वयं को निहारते हैं तो वहाँ हिडिंबा के स्थान पर द्रौपदी नजर आती है, हिडिंबा का हृदय विदीर्ण हो जाता है वह वापस अपने घर को लौट जाती है।

द्रौपदी के प्रति भीम का प्रेम पांचों भाइयों से भिन्न है, वह द्रौपदी के कहने से सहस्र दलों वाले सुगंधित पुष्प को लाने के लिए गंधमादन पर्वत पर चला जाता है और राजा कुबेर के तालाब से पुष्प सौगंधिकम लेकर आता है। रास्ते में उसकी मुलाकात रामायण के राम भक्त हनुमान से होती है हनुमान अपना रूप बदल साधारण वानर के वेश में भीम के मार्ग में बैठ जाते हैं और आवेश में वन को तहस-नहस करते जीव जंतुओं को अपने मार्ग से हटाते भीम को रोकते हैं। भीम आगे बढ़ने के लिए वानर को मार्ग से हटाना चाहता है, तब हनुमान कहते हैं कि मैं तो वृद्ध वानर हूँ बीमार हूँ यहाँ से हट नहीं सकता तुम जाना चाहते हो तो मेरी पूँछ हटाकर आगे बढ़ जाओ ऋक्रोधित भीम साधारण वानर बने हनुमान की पूँछ हटाने का प्रयास करते हैं, किंतु समस्त बल का प्रयोग करने पर भी वह हनुमान की पूँछ को हिला तक नहीं पाते, भीम को वानर रूपी हनुमान के दर्शन होते हैं पवन से उत्पन्न दोनों भाइयों का मिलन होता है हनुमान भीम के मिथ्या बल के अभिमान से परिचित कराते हैं, और भीम के आग्रह पर धर्म युद्ध में अर्जुन की पताका पर विराजमान होने का वचन देते हैं।

भीम और हनुमान के मिलन का यह प्रसंग महाकाव्य का अनूठा प्रसंग है, जहाँ काव्य समय सीमा को लांघ अन्य काल में सजीव हो उठता है। द्वापर के हनुमान का त्रेता युग के अंतिम चरण में उपस्थित हो जाना एक ऐसा अद्भुत प्रसंग है जो साहित्य और कला की कालातीत उपस्थिति और उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है। कला और साहित्य में ही ऐसी शक्ति होती है कि वह काल को जीत कालजर्ई हो जाती है।

इतना ही नहीं, अपने अज्ञातवास के दिनों में जब पांडव द्रौपदी के साथ महाराजा विराट के दरबार में भेष बदलकर रह रहे होते हैं, और विराट के महामंत्री किचक की दृष्टि द्रौपदी पर पड़ती है और वह किसी भी हालत में द्रौपदी को पाना चाहता है। तब कीचक के अत्याचार से व्याकुल द्रौपदी की रक्षा के लिए भीम आगे आते हैं और कीचक का वध कर द्रौपदी को उसके अत्याचार से मुक्त करते हैं।

स्त्रियों की शील मर्यादा का जैसा सम्मान भीम के चरित्र में दिखता है वह अन्य में गौण रूप में नजर आता है।

युद्ध की घोषणा सुन भीम और हिडिंबा का पोता बर्बरीक युद्ध भूमि की ओर आता है, वहाँ उसकी मुलाकात कृष्ण से होती है। कृष्ण के पूछने पर बर्बरीक बताता है कि वह निर्बल के पक्ष में लड़ने चला है, कृष्ण उसके आयुध की परीक्षा लेते हैं और उसकी शक्ति देख भयभीत हो जाते हैं। कृष्ण बर्बरीक से आग्रह करते हैं कि वह पांडवों के पक्ष में लड़े, किंतु बर्बरीक ने अपनी माँ को निर्बल के पक्ष में लड़ने का वचन दे दिया था। बर्बरीक को कौरवों के पक्ष में लड़ता देख कृष्ण उसका सिर धड़ से अलग कर देते हैं। बर्बरीक युद्ध आरंभ होने से पहले ही मारा जाता है, किंतु कृष्ण उसके मस्तक को अमरता का वरदान प्राप्त करते हैं। बर्बरीक अब लड़ नहीं सकता था मात्र दूर बैठा है युद्ध को देख सकता था।

महाभारत के युद्ध में भीम सर्वाधिक प्राक्रम का परिचय देते हैं। कौरव दल की सबसे अधिक क्षति भीम द्वारा होती है, वह दुशासन का वध कर दुर्योधन की जंघा तोड़ द्रौपदी को दी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हैं।

भीम महाबली है, अजेय है किंतु हृदय उसका अतिकोमल है, वंचितों की रक्षा और अधिकार के लिए धड़कता है।

भीम विजेता है किन्तु नितांत अकेला है।

कुछ इशारे थे जिन्हे दुनिया समझ बैठे थे हम,
उस निगाहे आशना को क्या समझ बैठे थे हम।

About the Play

The play "Bheem Gatha" revolves around the character of Pandav Bheem, who is portrayed as a powerful and muscular character in the Mahabharata. Bheem is one of the five brothers and is often misunderstood by people as being obese, pot bellied, short-tempered and lacking in wisdom, despite being physically strong. This perception of Bheem, however, makes him a comical character.

Although this perception of Bheem is not entirely incorrect, it is not the complete truth either. The drama explores the unexplored aspects of Bheem's character and presents a more nuanced portrayal of him. Bheem is shown to be a loyal and obedient person who always protects his family. He is committed to his ideals and possesses the knowledge of what is right and wrong. He is also shown as someone who is always ready to protect the weak, even at the cost of his own life.

Overall, "Bheem Gatha" portrays Bheem as a multifaceted character, with both strengths and weaknesses. The drama brings out the unexplored aspects of his personality and makes him a relatable and inspiring character.

The play starts with Duryodhana's plotting and the fire in the 'Lacquer palace'. Bhima saves his mother and brothers from the fire and evacuates them from the 'Lacquer palace'. The years of exile in the forest that followed were difficult for the Pandavas, but the story of their future was being knitted during these years. During this time, Bhima meets Hidimba, a forest-dwelling woman, and he kills Hidimba's brother, the demon Hidimba. Bhima and Hidimba fall in love and get married in the forest. This affection for a woman from a different community is a unique aspect of Bhima's character that cannot be found elsewhere. Bhima not only loves Hidimba but also spends time with her in the forest, and their union results in the birth of their son Ghatotkacha. It is Ghatotkacha who grows up to fight for the Pandavas in the Mahabharata war and makes the ultimate sacrifice. The love between Hidimba and

Bhima is a unique love, where the distinction between self and others, and between the same and different species disappears. Bhima's love for Hidimba and his connection to the forest never diminish.

When Dharmaraj Yudhishtira loses everything in a game of dice and Draupadi is put at stake, Bhima seeks revenge against Dushasana, who had pulled her hair, and Duryodhana, who had made her sit on his thigh, on behalf of Yudhishtira. Bhima's image is ingrained in Hidimba's heart. His son Ghatotkacha is growing up, and it is during their exile in the forest that Bhima meets Hidimba unexpectedly. She shows him his reflection in a magical mirror and asks if she still resides in his heart.

When Bhima looks at himself in the mirror, he sees Draupadi instead of Hidimba. Hidimba's heart is broken, and she returns to her home.

Bhima's love for Draupadi is different from that of his five brothers. At Draupadi's request, he goes to the 'Gandhamadana' mountain to fetch a fragrant flower with a thousand petals, and brings back the 'Saugandhika' flower from King Kubera's pond. On the way, he meets Hanuman, a devotee of Lord Rama from the Ramayana, who changes his form and sits in the guise of an ordinary monkey on Bhima's path. Hanuman stops Bheem, who in his frenzy, overturns trees and creatures that come in his path. Bhima wants to move on and wants the monkey to move away from his path. Then Hanuman says, "I am an old monkey, I am sick and cannot move from here. If you want to go, remove my tail and go ahead." Angry Bhima tries to remove Hanuman's tail, but even after putting all his strength, he cannot move it. Bhima realises that the monkey is none other than Hanuman, there, brothers born of the wind meet each other. Hanuman acquaints Bhima with his false pride in his strength and, at Bhima's request, promises to watch the Dharma Yudh seated on the flag of Arjuna's chariot. The unique incident of the meeting of Bhima and Hanuman in the epic, where the poem transcends the boundaries of time and becomes alive in another era. Hanuman, from the Dwapara Yuga, being present in the last phase of the Treta Yuga, is a wonderful incident that proves the transcendence and relevance of literature and art across time. Art and literature have such power that they can conquer time and become eternal.

Not only that, but during their exile, when the Pandavas were living incognito in King Virata's court with Draupadi, the chief minister of Virata, Kichaka, sets his eyes on Draupadi and desires her in any circumstance. In response to Kichaka's harassment, Bhima killed Kichaka upon Draupadi's request for help and freed her from Kichaka's harassment. Bheema's respect for women's modesty is prominent from that of other Pandavas brothers.

Hearing the announcement of war, Bhima and Hidimba's grandson, Barbarik, comes towards the battlefield. He meets Krishna there. When Krishna asks him, Barbarik says that he has come to fight on the side of the weak. Krishna tests his weapon and is amazed by his power. Krishna urges Barbarik to fight on the side of the Pandavas, but Barbarik had promised his mother to fight on the side of the weak. When Krishna sees Barbarik fighting for the Kauravas, he separates his head from his body. Before the start of the battle, Barbarik is killed, but Krishna grants him the boon of immortality. Barbarik can no longer fight, but he sits afar watching the battle.

In the war of Mahabharata, Bhima is introduced as the most powerful warrior. He inflicts the most damage to the Kaurava army, kills Dushasana, breaks Duryodhana's thighs to kill him, and keeps his promise to Draupadi. Bhima is mighty and invincible, but his heart is very tender. He beats for the protection of the oppressed and their rights. Bhima is a victor, but he is always alone.

कुछ इशारे थे जिन्हे दुनिया समझ बैठे थे हम,
उस निगाहे आशना को क्या समझ बैठे थे हम।

निर्देशकीय

बचपन में माँ रामायण और महाभारत की कहानियाँ सुनाया करती थी। रामायण तो समझ में आ जाता था, किंतु महाभारत को समझना कई अवसर पर मुश्किल हो जाता था। जैसे-जैसे बड़ी हुई, शिक्षा और भारतीय सौंदर्य की समझ बढ़ी, महाभारत समझ में आने लगा। मेरी समझ में यह आया कि कैसे एक महाकाव्य समाज का निर्माण करता है, किस प्रकार अलग-अलग मूल्यों को स्वीकार करना सिखाता है। जीव और आत्मा का संबंध समझ में आया, जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास हुआ, जीवन और कर्तव्य का अंतर संबंध समझ आया।

अपनी पढ़ाई के लिए मैं शांतिनिकेतन आ गई, शांतिनिकेतन का खुला वातावरण, आधुनिक एवं परंपरागत शिक्षा का अद्भुत मिश्रण। वहाँ रहते हुए रंगमंच से मेरा पहला परिचय हुआ और मेरी रंगमंच की यात्रा शुरू हुई, शांति देव घोष रंगमंच के मेरे पहले गुरु थे। शांतिनिकेतन शिक्षा का एक ऐसा मंदिर था, जहाँ पूरब और पश्चिम आपस में मिलकर एक हो गए थे, और इसी मिलन से विकसित हुआ निजता का भाव लिए एक नया सौंदर्य बोध जिसकी संवेदना भारतीय थी, बोलि स्थानीय थी और संप्रेषण वैश्विक। शांतिनिकेतन ने मुझे आधुनिकता की भारतीय समझ दी और सौंदर्य की मेरी भारतीय दृष्टि का निर्माण किया।

हर सौंदर्य बोध अपने जीवन मूल्यों और दर्शन से अपना रूप ग्रहण करता है, पश्चिम का सौंदर्य बोध काव्य को दुःखांत एवं सुखांत में विभाजित करता है, दुःखांत और सुखांत का यह विभाजन पश्चिम के जीवन मूल्य और दर्शन से पैदा हुआ है। भारतीय दर्शन और सौंदर्यशास्त्र में, दुःखांत और सुखांत का यह विभाजन नहीं है, भारतीय काव्यशास्त्र आनंद की बात करता है, चाहे स्थाई भाव जो भी हो। भारतीय सौंदर्य बोध में कथ्य किसी एक भाव से बंधा नहीं है स्थाई भाव होता है किंतु अन्य भाव भी संचरित होते रहते हैं, इसलिए भारतीय सौंदर्य में, भाव नाट्य रूप के विभाजन का नियामक नहीं है, बल्कि कथा कहने का तरीका, उसका कथ्य उस के नायक नायिका उसकी वृत्ति इत्यादि से मिलकर उसका रूप निर्धारित होता है। नाट्य शास्त्र में उसकी व्याख्या दशरूपक के रूप में की गई है।

नाटक भीम गाथा का ताना-बाना पांडव भीम के इर्द-गिर्द बुना गया है, भीम एक ऐसा चरित्र है जिसके विषय में जन अवधारणा है कि वह मोटा है, पेटू है, बात-बात में क्रोधित हो जाता है, वह बलशाली तो है किंतु विवेक का अभाव है। भीम की यह जन अवधारणा उसे विनोदी चरित्र बना देती है। भीम की यह अवधारणा सर्वथा गलत तो नहीं किंतु पूर्ण सत्य भी नहीं है, यह पक्ष ही उसके व्यक्तित्व का मात्र पक्ष नहीं है। भीम के चरित्र के कई ऐसे अनछुए पक्षों को नाटक भीम गाथा के कथानक का अंग बनाया गया है।

नाटक का नायक भीम चाहता क्या है? उसे धन, संपदा और राजनैतिक शक्ति नहीं चाहिए। एक इंसान के रूप में उसका अपना जीवन संघर्ष है, अपने राजनैतिक और सामाजिक अस्तित्व का सवाल है। भीम का लक्ष्य आत्म केंद्रित नहीं है, वह बृहत परिपेक्ष में स्थितियों और वस्तुओं को देख पाता है, अपनी इसी बृहत दृष्टि के कारण वह तमाम विपरीत के बावजूद परंपरा से बाहर जा कर हिंडिंबा को पूर्णता में अपना पाता है। द्रौपदी के अपमान का बदला और शील की रक्षा, उसके लिए मात्र कर्तव्य नहीं लक्ष्य बन जाता है। भीम युद्ध लड़ता है बृहत की रक्षा के लिए, वह अर्जुन की तरह स्वयं को सर्वश्रेष्ठ या कर्ण की तरह महादानी कहलाने और अर्जुन से बड़ा धनुर्धर होने की इच्छा से युद्ध नहीं लड़ता। भीम आत्म केंद्रित नहीं है इसीलिए वो प्रेमी है।

भारतीय नाटको की नाट्यशास्त्रीय परंपरा, भारत की प्राचीनतम समृद्ध परंपरा है, जिसका दर्शन इस धरती का दर्शन है और उसका विधान इस धरती के लोगों की मान्यताओं और व्यवहार से बना है। नाट्यशास्त्र की जीवंत परंपरा का व्यवहार भारत के विभिन्न नृत्य रूपों एवं शास्त्रीय संगीत में स्पष्ट देखने को मिल जाता है। नाट्यशास्त्र की परंपरा और व्यवहार हजारों वर्षों से अपनी निरंतरता बनाए हुए हैं, कालावधी में इसके व्यवहार की तीव्रता में जरूर परिवर्तन जरूर आता है परंतु निरंतरता अबाध्य बनी हुई है।

हमारे आज के जीवन की गति, आज के समय का हमारा व्यवहार, हमारे मूल्य, हमारी नैतिकता निरंतर परिवर्तित हो रही है। ऐसे में आज के विद्यार्थियों के साथ नाट्यशास्त्र की परंपरा से जुड़ प्रस्तुति तैयार करना विद्यार्थियों को पुनः अपनी समृद्ध परंपरा एवं मूल्यों से जोड़ने और परिचय कराने का एक सुखद अवसर बन जाता है, शास्त्रीय प्रस्तुति विद्यार्थियों के सौंदर्य बोध को और समृद्ध बनाती है और उनके नैतिकता और मूल्यों की समझ को एक नया आयाम प्रदान करती है। विद्यार्थियों को भारतीय सौंदर्य बोध से परिचय कराने एवं नाट्यशास्त्र की परंपरा एवं व्यवहार से जोड़ने के लिए रसास्वादन नाम की एक श्रृंखला का आयोजन किया गया। दस दिनों तक चली इस श्रृंखला में देश के जाने-माने शास्त्रीय गुरु, नर्तक और संगीतकारों ने विद्यार्थियों के साथ आमने-सामने बैठकर बातचीत की और शास्त्रीय परंपरा की अपनी प्रस्तुति से उनका परिचय कराया। दस दिनों का यह रसास्वादन विद्यार्थियों को वह आधार भूमि देता है जिस पर खड़े हो वह अपनी शास्त्रीय प्रस्तुति को तैयार करते हैं।

शास्त्रीय नाटक मेरे लिए रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी से लौटकर अपने घर आने जैसा है, घर की अपनी गति अपनी लय होती है, घर का व्यवहार बाहर की दुनिया के व्यवहार से भिन्न होता है, उसकी खुशबू और उसका स्वाद बाहर से बिल्कुल अलग होता है, उसमें निजता होती है, अपनापन होता है, अधिकार तो होता है किंतु साझे भाव के साथ, आप अपने घर के लिए चिंतित होते हैं प्रतिदिन हो उसे समृद्ध करने में लगे रहते हैं अपने लिए नहीं आने वाले भविष्य के लिए। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इंसान को जब तक घर की आवश्यकता रहेगी नाट्यशास्त्र की शास्त्रीय परंपरा भी निरंतर बनी रहेगी। इसी विश्वास के साथ अपनी प्रस्तुति में आप लोगों को समर्पित कर रही हूँ यह प्रस्तुति जितनी विद्यार्थियों की है उतनी ही आपकी भी है और आप सब से परे आने वाले भविष्य की भी है।

अंत में मैं उन सब का धन्यवाद देना चाहूंगी जिन्होंने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस प्रस्तुति में हम सबकी मदद की है। देश के जाने माने प्रतिष्ठित और सम्मानित कलाकार मेरे इस प्रस्तुति के हिस्सा बने हैं बिना किसी शुल्क के अपनी सेवा प्रदान की है उन सब का मैं विशेष आभार प्रकट करती हूँ।

तो आइए आनंद उठाइए इस प्रस्तुति का। भूलवश कोई त्रुटि हुई हो तो आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे

Director's Note

As a child, my mother used to tell me stories from the Ramayana and the Mahabharata. While I could understand the Ramayana, the Mahabharata often proved to be difficult to comprehend. However, as I grew older and gained more education and understanding of Indian culture and aesthetics, I began to grasp the Mahabharata. I realised how an epic like this helps to build a society and teaches us to accept different values. I came to understand the relationship between life and soul, the fleeting nature of existence, and the difference between living and dutifulness.

I came to Shantiniketan for further studies, attracted by its open atmosphere and the wonderful fusion of modern and traditional pedagogy. It was there that I was introduced to the world of theatre, and my journey in theatre began. Shanti Dev Ghosh was my first guru in the theatre. Shantiniketan was such a temple of education, where East and West came together and became one, and from this union, a new sense of individuality was evoked with a unique beauty that was Indian in its sensibility, local in its language, and global in its transmission. Shantiniketan gave me an understanding of the modern in Indian culture and developed my Indian perspective on aesthetics.. Every aesthetic perception takes its form and essence from its values and philosophy of life. The Western aesthetic perception divides poetry into tragedy and comedy, and this division of tragedy and comedy was born from the morale and philosophy of the West. In Indian philosophy and aesthetics, there is no such division between tragedy and comedy. Indian literary theory focuses on the concept of bliss, regardless of the sthayi bhav (permanent emotion involved). In Indian aesthetic perception, the narrative is not bound by a single emotion; there is a permanent emotion, but other emotions continue to circulate. Therefore, Indian aesthetics does not have a rule for the division of emotional drama. Instead, the form of storytelling, the character's portrayal, the protagonist, the heroine, their characteristics, etc., determine its form. The Natyashastra provides its explanation as the tenfold classification. The play "Bheem Gatha" is woven around the character of Pandava Bheema. Bheema is a character about whom the common perception is that he is fat, gluttonous, easily angered, physically strong but lacking in intellect. This popular perception turns him into a comical character. However, this perception of Bheema is not entirely wrong, but it is not the complete truth either. It is just one aspect of his personality. The play "Bheem Gatha" incorporates many such unexplored aspects of Bheema's character into its narrative structure.

The hero of the drama, Bheem, desires what? He doesn't want wealth, prosperity, and political power. As a human being, his struggle is his own life, a question of his political and social existence. Bheem's goal is not self-centred; he can see situations and objects in a broader perspective. It is due to his broad vision that he transcends traditional norms and achieves perfection in his relationship with Hidimba, despite all the differences. Seeking revenge for Draupadi's insult and protecting righteousness becomes his duty rather than his goal. Bheem fights to protect the larger cause, not out of a desire to be the best like Arjuna or to be called a great warrior like Karna. Bheem is not self-centred, and that is why he is a lover.

The Natyashastra tradition of Indian drama is the oldest and richest tradition of India, which reflects the vision of this land and its constitution is derived from the beliefs and behaviour of its people. The practice of the living tradition of Natyashastra can be clearly seen in various forms of Indian dance and classical music. The tradition and practice of Natyashastra have been consistently preserved for thousands of years, although there have been some changes in its practice over time, its continuity remains unbroken.

The pace of our present life, our behavior in the present time, our values, and our morality are constantly changing. In this context, presenting the tradition of Natyashastra to today's students becomes a joyful opportunity to reconnect them with their rich tradition and values, and introduces them to it. Classical presentations enhance students' aesthetic awareness and enrich their understanding of ethics and values, providing them with a new dimension. To introduce students to Indian aesthetics and connect them with the tradition and practice of Natyashastra, a series of events called "Rasasvadan" was organized. For ten days, renowned classical gurus, dancers, and musicians from the country interacted with students, acquainting them with the tradition through their presentations. This ten-day Rasasvadan provides students with the foundation upon which they build their own classical presentations.

Classical drama is like returning home from a hectic and busy life. It has its own rhythm, different from the behavior of the outside world. It has its own fragrance and flavor, distinct from the outside world. It possesses intimacy and familiarity, and although it has authority, it is shared with collective emotions. You are concerned about your home and continually strive to enrich it, not only for yourself but also for the future that is yet to come. I firmly believe that as long as the need for a home exists, the classical tradition of Natyashastra will continue to flourish. With this belief, I dedicate my presentation to all of you. This presentation belongs to not only the students but also to all of you and to the future that lies beyond.

Lastly, I would like to express my gratitude to all those who have directly or indirectly assisted us in this presentation. Esteemed and respected artists of the country have become a part of this presentation, providing their services without any fee, and for that, I am deeply grateful.

So let us rejoice in this presentation. If any mistakes have occurred inadvertently, I hope you will forgive me.

निर्देशक के बारे में — प्रो. विदुषी ऋता गांगुली (पद्मश्री)



प्रो. विदुषी ऋता गांगुली (पद्मश्री) ने एक प्रामाणिक गतिपरक ग्रीक नाटक 'इडिपस' के निर्देशक के रूप में यूएसए में बतौर एक रंगकर्मी अपना कैरियर शुरू किया था। इस प्रस्तुति ने विशेष रूप से 60 के दशक की शुरुआत में, उन्हें भारतीय रंग-प्रशिक्षण परिदृश्य में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संगीत-प्रदर्शन के साथ, उनकी शास्त्रीय नृत्य पृष्ठभूमि ने उनके मन-मस्तिष्क को उद्देलित किया और उन्हें अपनी देह को मूकाभिनय और गति के लिए प्रशिक्षित करने में मदद की। 1968 में वह राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अभिनय विभाग में अध्यापन संकाय का हिस्सा बनीं।

यहां, रा.ना.वि. में, उन्होंने 'मूवमेंट ऐण्ड माइम' नामक एक पाठ्यक्रम का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने प्राचीन भारत के नाट्य-ग्रंथों के अनुसार रंगमंच के छात्रों को प्रशिक्षित किया। उनका मानना था कि यह भारतीय शास्त्रीय रंगमंच की समझ के माध्यम से छात्रों के मस्तिष्क और देह को तैयार करता है। उन्होंने रंगमंच के छात्रों के लिए एक विस्तृत नृत्य और संगीत एप्रिसिएशन पाठ्यक्रम 'रसास्वादन' की कल्पना और संरचना की है जो अब पन्द्रह वर्षों से अधिक समय से संचालित किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम देश के प्रमुख विद्वानों, नृत्यांगनाओं और संगीतकारों— बिरजू महाराज, सोनल मानसिंह, सिंघजीत सिंह, चार्त सिंह, एस. कनक, राजा और राधा रेड्डी, लक्ष्मी विश्वनाथन, शोभना नारायण, माधवी मुद्गल, लीला सैमसन, सदानम् बालकृष्णन्, देबू चौधरी, किशोरी अमोनकर, सुमति मुत्तकर, शुभा मुद्गल और जीवन पाणि द्वारा व्यावहारिक और सैद्धांतिक इनपुट से समृद्ध है। 1995 में उन्होंने वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र और मानसशास्त्र पर विस्तृत शोध के आधार पर, भरत के नाट्यशास्त्र (2सरी शताब्दी ईसा पूर्व) द्वारा परिभाषित सिद्धांतों और अनुपातों पर निर्मित प्राचीन शास्त्रीय सभागार 'विकृष्टमाध्यम' के पुनर्निर्माण द्वारा अनुकरणीय कार्य किया। 2000 वर्षों में पहली बार ऐसा प्रयास किया गया है। यहाँ उन्होंने शास्त्रीय नाटकों— कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम्, बोधयान के भगवदज्जुकम्, और विशाखदत्त के मुद्राराक्षस की एक त्रयी 'त्रिधारा' की अवधारणा और निर्देशन किया— संस्कृत में साढ़े सात घंटे का प्रदर्शन जिसमें शास्त्रीय संस्कृत रंगमंच के सभी तत्वों मंच और सभागार, अभिनय शैली, संगीत और परिवेश को फिर से निर्मित करने के लिए हस्त अभिनय को शामिल किया गया था। उन्होंने कालिदास के शास्त्रीय नाटकों 'मेघदूत', 'शाकुन्तलम्' और 'विक्रमोर्वशीयम्' की त्रयी 'अभिषाप' (1999) का निर्देशन किया। इसमें नाट्यशास्त्रीय परंपराओं में प्रदर्शित शास्त्रीय कथाओं को समकालीन रूप से सँवारा गया और उनकी व्याख्या रंगमंच के लिए एक नया आयाम खोलने के लिए जीवंत हो उठी।

अपने तीन दशकों से अधिक के कार्यकाल में, वह राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का एक अभिन्न अंग रही हैं और उन्होंने कई प्रस्तुतियों, डिज़ाइन किए गए परिधानों और संगीत का निर्देशन किया है। उनके निर्देशन में सबसे ज़्यादा याद किए जाने वाले नाटक हैं— रवींद्रनाथ टैगोर का 'ताशेर देश', और 'चांडालिका' और नैशनल एकेडमी ऑफ़ ड्रामेटिक आर्ट्स (एनआईडीए ऑस्ट्रेलिया) में प्रदर्शित विजय दान देथा का 'दुविधा'; विजय दान देथा की 'दो लोक कथाएं', रवींद्रनाथ टैगोर की 'बाल्मीकि प्रतिभा', भारतेन्दु का 'अँधेर नगरी चौपट राजा' के साथ-साथ टावर हॉल थिएटर फाउण्डेशन— रेपर्टरी कंपनी, (कोलंबो, श्रीलंका); कला अकादमी (गोवा) के साथ विजय दान देथा का 'दुविधा', रवींद्रनाथ टैगोर का 'श्यामा', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता को शामिल करते हुए बर्टोल्ट ब्रेख्त का 'द कॉकेशियन चॉक सर्कल' और पिकासो की पेंटिंग्स पर आधारित 'रस संदर्भ' शामिल हैं। बी.वी. कारंत द्वारा निर्देशित 'भगवदज्जुकम्' में, उन्होंने तांत्रिक चित्रपट्ट द्वारा निर्धारित रंगों के साथ, मूर्तिकला, और चित्रों से प्रेरित बिना सिले लिपटी वेशभूषा के उपयोग का महत्वपूर्ण कार्य किया।

इन वर्षों में, उन्होंने इब्राहिम अल्काजी जैसी प्रख्यात रंग-विभूतियों के साथ काम किया, जिनके लिए उन्होंने शेक्सपियर के 'ओथेलो' के लिए संगीत बनाया और वेशभूषा तैयार की और मूच्छकटिकम् पर आधारित भास के 'मिट्टी की गाड़ी' के लिए नृत्य-संरचना की। सोजो सातो के 'इबारगी' में उन्होंने कोरियोग्राफी की थी। उन्होंने रूसी रंग-विशेषज्ञ तेप्लाकोफ़ के साथ सहभागिता में काम किया है और चेखव के 'इवानोफ़' के लिए संगीत दिया है, और राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित सुरेंद्र वर्मा के— 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' के लिए भी संगीत दिया है। उन्होंने फ़िट्ज़ बेनेविट्ज़ द्वारा निर्देशित ब्रेख्त के 'थ्री पेनी ओपेरा', जर्मन निर्देशक कार्ल वेबर द्वारा निर्देशित 'द कॉकेशियन चॉक सर्कल', शांता गाँधी के 'जस्मा ओडन' और ब. व. कारंत द्वारा निर्देशित भारतेन्दु के 'विद्या सुन्दर' के लिए गति-अभिकल्पना की।

उनके 'भारतीय शास्त्रीय रंगमंच एप्रिसिएशन पाठ्यक्रम' राष्ट्रीय नाट्य कला संस्थान— एनआईडीए (ऑस्ट्रेलिया) ग्लासगो थिएटर कंपनी, यूके; रॉयल एकेडमी ऑफ़ ड्रामेटिक आर्ट्स— राडा (इंग्लैंड); कोलम्बो, श्रीलंका); तेल अवीव इंस्टिट्यूट ऑफ़ ड्रामेटिक आर्ट्स, (इज़राइल); और इस्लामाबाद और कराची (पाकिस्तान) में आयोजित किए जाते हैं; जहाँ उनकी बहुत सराहना की गई है और उनकी बहुत माँग है। राष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने श्रीनगर, गुवाहाटी, मदुरै, बीकानेर, एशिया सोसाइटी (नई दिल्ली), उज्जैन, अंडमान और निकोबार, तमिलनाडु, पटियाला, कोलकाता (नांदीकार), और शिबसागर (असम) जैसी जगहों पर रंग-कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

उन्होंने कलाधर्मी के निदेशक के रूप में काम किया है, जो एक पंजीकृत गैर-लाभकारी संगठन है जो प्रदर्शन कला के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। उन्होंने नागरी भारतीय रंगमंच के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर 'अबला सबला' का निर्देशन किया था— एक अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुति जिसने दो सौ वर्षों में नागरी भारतीय रंगमंच के महिला पात्रों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने कलाधर्मी के लिए भी पर्यावरण मंत्रालय द्वारा प्रायोजित रवींद्र नाथ टैगोर के मुक्तधारा का भी निर्देशन किया था।

उन्होंने सूफीवाद पर व्यापक शोध भी किया और सूफी संतों— बुल्ले शाह, कबीर और मीरा के काव्य और दर्शन पर आधारित एक बहु-कला प्रदर्शन 'रूह-ए-इश्क' का निर्माण किया। सूफीवाद के सात चरणों पर प्रदर्शित यह अग्रणी कार्य बांग्लादेश, अमेरिका, श्रीलंका और पाकिस्तान के कलाकारों के साथ पूरे भारत में किया गया। उन्हें 2003 में प्रतिष्ठित पद्म श्री पुरस्कार, 2000 में प्रतिष्ठित अकादमी पुरस्कार, 1999 में राजीव गाँधी शिरोमणि पुरस्कार, 1998 में क्रिटिक सर्कल ऑफ़ इंडिया पुरस्कार, 1993 में बांग्लादेश का मलिका-ए-मौसिकी पुरस्कार, 1975 में दिल्ली राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, और उन्हें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने लिविंग लैजेंड पुरस्कार से भी सम्मानित किया है।

ABOUT THE DIRECTOR - PROF. VIDUSHI RITA GANGULY (PADMASHRI)

Prof. Vidushi Rita Ganguly (Padma Shri) had started her career as a theatre person in USA as the director of an authentic movement-oriented Greek play 'Oedipus'. This production had particularly been instrumental in bringing her to the Indian theatre training scenario during early 60s. Her classical dance background coupled with music exposure, stirred in her mind and had helped her in training her body for mime and movement. In 1968, she became a part of the teaching faculty at National School Drama-Department of Acting.

Here, at the NSD, she spearheaded a course called 'Movement and Mime', wherein she trained the students of theatre as per drama texts of ancient India. She believed that this prepared minds and bodies of students for a through and through understanding of the Indian Classical Theatre. She has conceived and structured 'Rasaswadan' a detailed dance and music appreciation course for theatre students that is being conducted now for over fifteen years. This course is enriched with practical and theoretical inputs by the country's leading scholars, dancers, and musicians namely, Birju Maharaj, Sonal Mansingh, Singhajeet Singh, Chart Singh, S. Kanaka, Raja and Radha Reddy, Laxmi Vishwanathan, Shobhana Narayan, Madhavi Mudgal, Leela Samson, Sadanam Balakrishnan, Debu Choudhary, Kishori Amonkar, Sumati Mutatkar, Shubha Mudgal and Jeewan Pani. In 1995 she did pioneering work by re-creation of Ancient Classical Auditorium 'Vikrishtamadyam' - built on the principles and proportions defined by the Natyashastra of Bharata (c. 2nd BC), based on detailed research on Vastushastra, Shilpashastra, and Manasara Shastra. It is for the first time in 2000 years that such an attempt was made. Here she conceptualized and directed 'Tridhara' - a Trilogy of Classical Plays, Kalidas's Abhijnanashakuntalam, Bodhayana's Bhagwadajjukam, and Vishakhadatta's Mudrarakshasa - a Seven and a half-hour-long performance in Sanskrit incorporating Hasta Abhinaya to recreate all elements of Classical Sanskrit Theatre i.e. its stage and auditorium, the acting style, music, and ambiance. She directed 'Abhishap' (1999) - Trilogy of Classical Plays - 'Meghdoot', 'Shakuntalam' and 'Vikramorvashee' by Kalidas. In this, the classical stories performed in Natyashastric traditions were given a contemporary treatment and their interpretation came alive to open a new dimension for the theatre. In a tenure that spans over three decades, she has been an integral part of the National School of Drama and has directed many productions, designed costumes, and scored music. The best-remembered plays under her direction are Rabindranath Tagore's 'Tasher Desh', and 'Chandalika', Vijay Dan Detha's 'Duvidha' performed in National Academy of Dramatic Arts (NIDA Australia); Vijay Dan Detha's 'Do Lok Kathayein', Rabindranath Tagore's 'Balmiki Pratibha', Bhartendu's 'Andher Nagari Chopat Raja' along with Tower Hall Theatre Foundation - Repertory Company, (Colombo, Sri Lanka); Vijay Dan Detha's 'Duvidha' with Kala Academy (Goa), Rabindranath Tagore's 'Shyama', Bertolt Brecht's 'The Caucasian Chalk Circle' incorporating Sarveshwar Dayal Saxena's poetry and 'Rasasandarbh' based on Picasso's Paintings. In 'Bhagwadajjukam' directed by B.V. Karanth, she had pioneered the use of the unstitched draped costumes, inspired by sculpture and paintings with colors, determined by the Tantrik palette.

Over the years, she worked with eminent theatre personalities like Ebrahim Alkazi for whom she scored music and designed costumes for Shakespeare's 'Othello' and choreographed for Bhasa's 'Mitti Ki Gadi' based on Mricchakatikam. In Sojo Sato's 'Ebaragi' she did the choreography. She has closely worked with Russian theatre expert Teplyakov and gave music for Chekhov's 'Ivanov', and also for Surendra Verma's 'Surya ki Antim Kiran Se Surya ki Pehli Kiran Tak', directed by Ram Gopal Bajaj. She designed movement in Brecht's 'Three Penny Opera' directed by Fritz Bennewitz's, 'The Caucasian Chalk Circle' directed by German Director, Carl Webber, Shanta Gandhi's 'Jasma Odan' and Bhartendu's 'Vidya Sunder' directed by B.V. Karanth.

Her 'Indian Classical Theatre Appreciation Courses' are conducted at the National Institute of Dramatic Arts - NIDA (Australia); Glasgow Theatre Company, UK; Royal Academy Of Dramatic Arts - RADA (England); Colombo (Sri Lanka); Tel Aviv Institute Of Dramatic Arts, (Israel); and Islamabad & Karachi (Pakistan) where they have been greatly appreciated and are much sought after. At the national level, she has organized theatre workshops at places like Srinagar, Guwahati, Madurai, Bikaner, Asia Society (New Delhi), Ujjain, Andaman & Nicobar, Tamil Nadu, Patiala, Kolkata (Nandikar), and Shibsagar (Assam).

She has worked as the Director of 'KALADHARMI', a registered non-profit organization dedicated to the promotion of young talent in field of performing arts. She had directed on the occasion of bicentenary celebrations of Urban Indian Theatre 'Abala Sabala' - an international production that showcased Women Characters represented in Urban Indian Theatre over two-hundred years. She had also directed for Kaladharmi, Rabindra Nath Tagore's 'Muktadhara' sponsored by the Ministry of Environment. She also did extensive research on Sufism and produced a multi-art spectacle 'Rooh - E - Ishq', based on the poetry and philosophy of Sufi Saints - Bulleh Shah, Kabir, and Meera. This pioneering work expounded upon the seven stages of Sufism performed all over India with artists from Bangladesh, USA, Sri Lanka, and Pakistan. She has received the prestigious Padma Shri award in 2003, prestigious Academy Award in 2000, Rajiv Gandhi Shiromani Award in 1999, Critic Circle of India Award 1998, Malika-E-Mousiqui Award of Bangladesh in 1993, Delhi State Award in 1975, and also she has received Living Legend Award from National School of Drama.

श्रद्धा सुमन

कुछ इशारे थे जिन्हें दुनिया समझ बैठे थे हम

उस निगाह-ए-आश्ना को क्या समझ बैठे थे हम

रफ़ता रफ़ता ग़ैर अपनी ही नज़र में हो गए
वाह-री ग़फलत तुझे अपना समझ बैठे थे हम

होश की तौफ़ीक़ भी कब अहल-ए-दिल को हो सकी
इश्क़ में अपने को दीवाना समझ बैठे थे हम

पर्दा-ए-आजुर्दगी में थी वो जान-ए-इल्तिफ़ात
जिस अदा को रंजिश-ए-बेजा समझ बैठे थे हम

क्या कहें उल्फ़त में राज-ए-बे-हिंसी क्यूँकर खुला
हर नज़र को तेरी दर्द-अफ़जा समझ बैठे थे हम

बे-नियाज़ी को तिरी पाया सरासर सोज ओ दर्द
तुझ को इक़ दुनिया से बेग़ाना समझ बैठे थे हम

इंक्लाब-ए-पय-ब-पय हर गर्दिश ओ हर दौर में
इस ज़मीन ओ आसमों को क्या समझ बैठे थे हम

भूल बैठी वो निगाह-ए-नाज़ अहद-ए-दोस्ती
उस को भी अपनी तबीअत का समझ बैठे थे हम

साफ़ अलग हम को जुनून-ए-आशिक़ी ने कर दिया
ख़ुद को तेरे दर्द का पर्दा समझ बैठे थे हम

कान बजते हैं मोहब्बत के सुकूत-ए-नाज़ को
दास्ताँ का ख़त्म हो जाना समझ बैठे थे हम

बातों बातों में पयाम-ए-मर्ग़ भी आ ही गया
उन निगाहों को हयात-अफ़जा समझ बैठे थे हम

हुस्न को इक़ हुस्न ही समझे नहीं और ऐ 'फ़िराक़'
मेहरबाँ ना-मेहरबाँ क्या क्या समझ बैठे थे हम

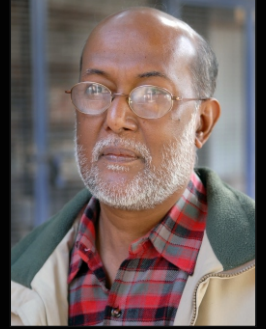


फ़िराक़ गोरखपुरी

Music Arranger : Kajal Ghosh

Born in 1953, Kajal Ghosh started learning tabla at the age of seven from Pt. Vishwanath Bose and Hindustani vocal music from Acharya KCD Brahspati and Smt. Sulochana Brahspati. He started composing music for plays in 1971 and was established as a professional freelance composer and music director since 1974. He has composed music for outstanding number of nationally acclaimed plays, Bengali plays, Jatras, Dance Drama, Street plays for Jan Natya Manch and Puppet Ramayana for Dadi Padamji, for various television serials, telefilms and also children's feature films Mundu and Disha.

His popular plays for stage and Television include Khubsarat Bala, Yahudi Ki Ladki, Anji, Ali Baba, Tota Bola, Nati Binodini, Dilli Chalo, Turup ka Patta, Kafka Ek Adhyay, Othello, Comrade Kumbhakarana and Uncle Vanya amongst others. He has been associated with eminent directors like Prassana, Kavita Nagpal, Ebrahim Alkazi and Rudraprasad Sengupta, has composed music for Doordarshan serials like Titliyan, Police File Se, Munshi Premchand ki Amar Kahaniyan and others; has a three decade long association with IPTA; is a founder member of the progressive songs squad, Parcham; and has represented Festival of India and abroad. Mr. Ghosh has also been felicitated by several awards, including the central Sangeet Natak Akademi Award for his contribution to theatre music in 2000.



संगीत अरेंजर — काजल घोष

काजल घोष 1953 में जन्मे काजल घोष ने सात साल की उम्र में पं. विश्वनाथ बोस से तबला और आचार्य केसीडी ब्रहस्पति और श्रीमती सुलोचना ब्रहस्पति से हिन्दुस्तानी गायन में प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ कर दिया था। नाटकों के लिए संगीत रचना आपने 1971 में शुरू की और 1974 में पेशेवर स्वतंत्र संगीतकार और संगीत निर्देशक के रूप में स्थापित हुए। आपने राष्ट्रीय स्तर के कई बहु प्रशंसित नाटकों, बंगाली नाटकों, जात्रा, नृत्य नाटिकाओं, जन नाट्य मंच के नुक्कड़ नाटकों और दादी पदमजी की कठपुतली रामायण के अलावा विभिन्न टेलिविजन धारावाहिकों, टेलीफिल्म्स और फिचर फिल्म 'मुंडु' और 'दिशा' के लिए संगीत रचना की है। आपके द्वारा संगीतबद्ध मंच और टेलिविजन के लोकप्रिय नाटकों में 'खुबसूरत बला', 'यहूदी की लड़की', 'अंजी', 'अली बाबा', 'तोता बोला', 'नटी बिनोदिनी', 'दिल्ली चलो', 'तुरुप का पत्ता', 'काफका एक अध्याय', 'ओथेलो', 'कामरेड कुंभकरण' और 'अंकल वान्या' शामिल हैं। आप प्रसन्ना, इब्राहिम अल्काजी, कविता नागपाल, और रुद्रप्रसाद सेनगुप्ता जैसे अनेक प्रतिष्ठित रंग निर्देशकों से जुड़े रहे हैं, और 'तितलियाँ', 'पुलिस फाइल से', 'मुंशी प्रेमचंद की अमर कहानियाँ', व अन्य दूरदर्शन धारावाहिकों के लिए संगीत रचना कर चुके हैं। इप्ता के साथ आपका तीन दशक पुराना संबंध है और प्रोग्रेसिव गीत समूह परचम के संस्थापक सदस्य हैं। विदेशों में भारत उत्सव का प्रतिनिधित्व कर चुके श्री घोष को 2000 में रंग संगीत में योगदान के लिए केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।



Costume Designer : Dolly Ahluwalia Tiwari

Internationally and Nationally renowned Costume Designer Dolly Ahluwalia Tiwari (Born 23rd April 1957) graduated from Delhi University. She joined National School of Drama and passed out in 1979 with "Best Actress Award".

Associated with theatre for nearly 40 years and has designed costumes in more than 75 plays. She has worked with eminent personalities in theatre world like Ebrahim Alkazi, B.V. Karanth, Fritz Benetwiz, Barry John, Bansi Kaul, Ram Gopal Bajaj, M. K. Raina, Prasanna, Kirti Jain, Mohan Maharishi, Anuradha Kapur, Pankaj Kapur, etc.

Her contributions as Costume Designer for some well known plays are Andha Yug, Leheron Ke Rajhans, Othello, Mahashanti, Aashad Ka Ek Din, Sharvilak, Macbeth, Umrao, Einstein, Quaid-e-Hayat, Abhimarak, Agni aur Barkha, Aur Kitney Tukrey, Seagul etc.

Designed costumes for award winning Haryanavi film Laado, Choo Lenge Akash, City of Delhi, Stiff Upper Lips, Earth-1947, Water, Omkara, Midnight Children, Haider, Bhaag Milkha Bhaag, Love Aaj Kal, Rockstar, Rangoon etc.

She has received National award for Bandit Queen, Haider, Vicky Donor, Sangeet Natak Academy Award, Balraj Sahni Award. Nominated and invited to Canada for the prestigious "Prix Gene Awards" for The Burning Season. IFFA Award for Vicky Donor, Bhaag Milkha Bhaag, Haider, Love Aaj Kal, Screen Award for Vicky Donor, Rangoon etc.

Dolly has also designed for Song & Drama Division, New Delhi, Sound & Light shows "SHATROOPA", "SAKRANTI", "KRISHNA KAVYA" directed by Shri Prem Mityani. She is also a well known in theatre, film & TV circle. She was Vice Chairman, Chandigarh Sangeet Natak Academy and has traveled internationally and participated in Festival of India and under cultural exchange programs abroad. She has participated & conducted Theatre workshops organized by National School of Drama, Sangeet Natak Academy and other prestigious institutes of India. She is also a visiting faculty with National School of Drama and presently working as a free-lance Designer/Actress.



वेशभूषा-अभिकल्पना — डॉली अहलुवालीया तिवारी

अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध वेशभूषा परिकल्पक डॉली अहलुवालीया तिवारी (जन्म 23 अप्रैल 1957) ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय आई और 1979 में प्सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार के साथ उत्तीर्ण हुईं।

आप लगभग 40 वर्षों से रंगमंच से जुड़ी हुई हैं और 75 से अधिक नाटकों में वेशभूषा परिकल्पना कर चुकी हैं। आपने इब्राहिम अल्काजी, ब.व. कारंत, फ्रिट्ज बेनेटविज, बैरी जॉन, बंसी कौल, राम गोपाल बजाज, एम.के. रैना, प्रसन्ना, कीर्ति जैन, मोहन महर्षि, अनुराधा कपूर, पंकज कपूर जैसी रंगमंच की दुनिया की प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ काम किया है। कुछ प्रसिद्ध नाटक जिनके लिए आपने वस्त्रसज्जा की है उनमें प्रमुख हैं अंधा युग, लहरों के राजहंस, ओथेलो, महाशान्ति, आषाढ़ का एक दिन, शर्विलक, मैकबेथ, उमराव, आइंस्टीन, कैद-ए-हयात, अविमारक, अग्नि और बरखा, और कितने टुकड़े, सीगल आदि। सम्मानित हरियाणवी फिल्म लाडो के अलावा आपने छू लेंगे आकाश, सिटी आफ दिल्ली, स्टिफ अपर लिप्स, अर्थ- 1947, वाटर, ओमकारा, मिडनाइट चिल्ड्रन, हैदर, भाग मिल्खा भाग, लव आज कल, रॉकस्टार, रंगून आदि कई हिन्दी फिल्मों की वस्त्रसज्जा परिकल्पना की है।

आपको बैंडिट क्वीन, हैदर और विककी डोनर के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, एवं बलराज साहनी पुरस्कार से नवाजा गया है। आपकी द बर्निंग सीजन प्रतिष्ठित प्प्रिक्स जीन अवार्ड्स के लिए नामांकित हुई और इसके लिए आपको कनाडा आमंत्रित किया गया। इसके अलावा आपको विककी डोनर, भाग मिल्खा भाग, हैदर, लव आज कल के लिए आईएफएफए अवार्ड तथा विककी डोनर और रंगून के लिए स्क्रीन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। डॉली ने प्रेम मटियानी निर्देशित गीत एवं नाटक प्रभाग, नई दिल्ली की ध्वनि एक प्रकाश प्रस्तुतियां शतरूपा, सक्रान्ति, कृष्ण काव्य के लिए भी वस्त्र-सज्जा परिकल्पना की है।

आप रंगमंच, फिल्म और टीवी सर्कल का जाना-पहचाना नाम हैं। आप चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी की उपाध्यक्ष रही हैं, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के तहत कई देशों की यात्रा कर चुकी हैं और वहाँ हुए इंडिया फेस्टीवल में भाग ले चुकी हैं। आपने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, संगीत नाटक अकादमी और अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा आयोजित कई रंग कार्यशालाओं में भाग लिया और उनका संचालन किया है। सुश्री डॉली अहलुवालीया राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में अतिथि संकाय हैं और वर्तमान में बतौर स्वतंत्र परिकल्पक अभिनेत्री देशभर में काम कर रही हैं।

Light Designer : Souti Chakraborty



Born in Kolkata, Souti Chakraborty started Theatre in 1984. He was associated with the “GRIPS” theatre in Kolkata for 6 years. He was graduated from National School of Drama in the year 2001 with specialization in Design and Direction. He has worked in National School of Drama Repertory Company for 7 years as a Designer, Director and Actor. As a light designer he has designed more than 90 productions. Some of his major directorial works are “Chanakya Vishnugupta” for National School of Drama Repertory Company, “Look Back in Anger”, “Aparichit (a non-verbal play)” “Accidental death of an anarchist”, “Adhantar”, “A Streetcar named desire”, “Urubhangam”, “Kanyadaan” etc. As an actor, he has done almost 1000 performances across India. He represented India in “Young Theatre –Workers Workshop” in Berlin, Germany. For the last 13 years along with other theatre activities, he is also teaching in NSD, various universities and theatre institutes across India. He has been awarded the prestigious Sangeet Natak Akademi award for his contribution as a light designer for the year 2019. He has also been awarded “Manohar Singh Smriti Puraskar” by National School of Drama. For 10 years, he was the Technical Director for Bharat Rang Mahotsav (the international theatre festival organised by National School of Drama). He has designed “BLACK BOX Auditorium” in India and also working as a consultant for building and up-gradation of Theatre Spaces across India. As Technical director or as Light Designer he has travelled to Germany, Greece, Italy, Russia, China and Bangladesh.

प्रकाश-अभिकल्पना – सौति चक्रवर्ती

कोलकाता में जन्मी सौति चक्रवर्ती ने 1984 में थिएटर की शुरुआत की थी। वह 6 साल तक कोलकाता के “ग्रिप्स” थिएटर से जुड़ी रहीं। उन्हें डिजाइन और निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ वर्ष 2001 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक किया गया था। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा रिपर्टरी कंपनी में 7 साल तक एक डिजाइनर, निर्देशक और अभिनेता के रूप में काम किया है। एक प्रकाश डिजाइनर के रूप में उन्होंने 90 से अधिक प्रस्तुतियों को डिजाइन किया है। उनके कुछ प्रमुख निर्देशन कार्यों में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा रिपर्टरी कंपनी के लिए पञ्चाङ्ग विष्णुगुप्त, प्लुक बैक इन एंगर, अपरिचित (एक गैर-मौखिक नाटक), एक अराजकतावादी की आकस्मिक मृत्यु, अधांतर, शामिल हैं। स्ट्रीटकार नाम की इच्छा, उरुभंगम, कन्यादान आदि। एक अभिनेता के रूप में, उन्होंने पूरे भारत में लगभग 1000 प्रदर्शन किए हैं। उन्होंने बर्लिन, जर्मनी में प्यंग थिएटर-वर्कर्स वर्कशॉप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। पिछले 13 वर्षों से अन्य थिएटर गतिविधियों के साथ-साथ, वह एनएसडी, भारत भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों और थिएटर संस्थानों में भी पढ़ा रहे हैं। उन्हें वर्ष 2019 के लिए प्रकाश डिजाइनर के रूप में उनके योगदान के लिए प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा मनोहर सिंह स्मृति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। 10 वर्षों तक, वह भारत रंग महोत्सव (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच उत्सव) के तकनीकी निदेशक थे। उन्होंने भारत में ब्लैक बॉक्स ऑडिटोरियम डिजाइन किया है और पूरे भारत में थिएटर स्पेस के निर्माण और उन्नयन के लिए एक सलाहकार के रूप में भी काम कर रहे हैं। तकनीकी निदेशक या लाइट डिजाइनर के रूप में उन्होंने जर्मनी, ग्रीस, इटली, रूस, चीन और बांग्लादेश की यात्रा की है।



Playwright : Asif Ali



Asif Ali Haider Khan was born in Chhapra, Bihar. He did his schooling from Muzzafarpur. He went to Patna University for further studies. He inherited his inclination towards Art and Literature from his maternal family, that eventually became his area of study. In 2000, he graduated from National School of Drama with specialization in Acting. He has a theatre group Rang Virasat in Delhi. Presently, he is teaching Modern Indian Drama at National School of Drama. He worked with eminent theatre personalities and simultaneously developed his interest in playwriting. He has adapted Brecht's 'The Good Woman of Setzuan' as Dur Gaon ki Bhali Aurat directed by Banshi Kaul. He has also adapted Hazari Prasad Diwedi's novel 'Anam Das ka Potha' into a play directed by Robin Das.

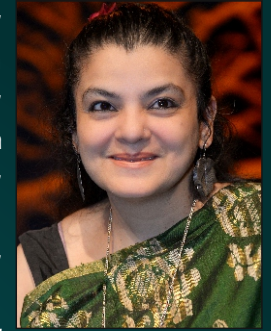
He is a renowned young playwright. He has written more than 15 plays. He has adapted and translated more than 30 plays. His original writings include Kafka: Ek Adhyaya, Gulab Bai, Rang Abhang, Station, Bawli, A Speedic Dream, Land Where Life is good, Cansurvive: Subah ka Pata, Palayan and Tukda Shehar. He received the "Ustad Bismillah Khan Puruskar" by Sangeet Natak Academy, 2006, for Playwriting. He was awarded "Krishna Baldev Vaid Fellowship" by the Mandi Drama School, Himachal Pradesh. He has been awarded "Manohar Singh Smriti Puraskar", 2013 by National School of Drama for his outstanding contribution in the field of Playwriting.

आलेख – आसिफ अली

प्रतिष्ठित नाटककार, अभिनेता और निर्देशक आसिफ अली राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में विशेषज्ञता के साथ परास्नातक डिप्लोमा प्राप्त किया। बाद में बतौर अभिनेता उन्होंने कई वर्षों तक रा.ना.वि. रंगमण्डल में भी कार्य किया। अनुवाद और रूपान्तरण के क्षेत्र में उन्होंने एक विश्वसनीय नाम उन्होंने मोहन महर्षि, रामगोपाल बजाज, अनुराधा कपूर, रीता गांगुली, बंसी कौल, बिपिन कुमार, सुरेश शर्मा, डेविड जिंडर, रिकार्डो, रॉबिन दास और रॉयस्टन एबल आदि जैसे देश के कई दिग्गज रंग- व्यक्तित्वों के साथ एक लेखक के रूप में सहभागिता की है। सन् 2006 में नाट्य लेखन के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादमी के शउस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके द्वारा लिखे मौलिक नाटकों में काफ़का एक अध्याय 59 मिनट 60 सेकण्ड, शगुलाब बाई, शरंग अभंग, श्विखण्डित छाया, 'कैन सरवाइव – सुबह का पता', है। टुकड़ा शहर, कर्ण गाथा, खूब लड़ी मर्दानी, एसिडिक ड्रीम, लैंड व्हेयर लाइफ इज गुड महत्वपूर्ण हैं। वहाँ लिखना नाट्य लेखन अनुवाद और रूपांतरण के क्षेत्र में उन्होंने एक विश्वसनीयता हासिल की है। वे फिल्म एवं टेलीविजन इंस्टीट्यूट, पूनाय रा. ना. वि. सिक्किम सेंटर, गंगटोक और म.प्र. नाट्य विद्यालय, भोपाल आदि अनेक संस्थानों में अतिथि संकाय हैं। आसिफ अली की गिनती देश के युवा निर्देशकों में की जाती है आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में टुकड़ा एक शहर, नाच्यो बहुत गोपाल, कमिलिया, गगन लाझले महत्वपूर्ण है लेखन के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए आपको सन 2016 मनोहर सिंह स्मृति सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। वर्तमान में वे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में आधुनिक भारतीय रंगमंच के प्राध्यापक नाटकों में ये नाम जोड़ देना



Meghna Kothari is an actress by profession and a dancer by training. But her core training--and her first love--is dance. She learned Kathak for years under the tutelage of the peerless Pandit Birju Mahara. Meghna has trained under the Pakistani musician Chaahat Baba and Ustad Sultan Khan in Indian classical music. A star student at Ebrahim Alkazi's Living Theatre academy, she has a number of memorable theater performances to her credit such as Ranju & Dadi in Mahesh Elkunchwar's Virasat 1 & 2, Irina in Anton Chekhov's Three Sisters & Iphigenia in Euripides's Iphigenia In Aulis to name a few. She has worked with filmmakers of the caliber of Shyam Benegal and Feroz Khan. In Gurinder Chaddha's film 'Bride and Prejudice' Meghna brought her classical training and instinctive comic timing together to produce a delightful performance. The arts are in Meghna's genes. Her father, the late Keshav Kothari, was a percussionist and dancer in his own right, but is better known for his pioneering work as secretary of the Sangeet Natak Academy. Indian culture became one of the nation's best exports under him. Her mother, Padmashree Rita Ganguly, was Begum Akhtar's favorite disciple. She is one of India's finest living exponents of the ghazal, and works tirelessly to keep Begum Akhtar's legacy alive. Today Meghna lives in Kaladham, in Greater Noida and coordinates a film making course called Ctrl Alt Cinema.



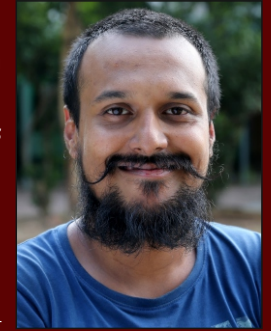
सह-निर्देशक – मेघना कोठारी

मेघना कोठारी पेशे से एक्ट्रेस और ट्रेनिंग से डांसर हैं। लेकिन उसका मुख्य प्रशिक्षण—और उसका पहला प्यार—नृत्य है। उन्होंने वर्षों तक अद्वितीय पंडित बिरजू महारा के संरक्षण में कथक सीखा। मेघना ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में पाकिस्तानी संगीतकार चाहत बाबा और उस्ताद सुल्तान खान के तहत प्रशिक्षण लिया है। इब्राहिम अल्काजी की लिविंग थिएटर अकादमी में एक स्टार छात्र, उनके नाम पर महेश एलकुंचवार की विराट 1 और 2 में रंजू और दादी, एंटोन चेखव की थ्री सिस्टर्स में इरीना और यूरिपिडस के इफिजेनिया में औलिस में नाम रखने के लिए कई यादगार थिएटर प्रदर्शन हैं। कुछ उन्होंने श्याम बनेगल और फिरोज खान जैसे कैलिबर के फिल्म निर्माताओं के साथ काम किया है। गुरिंदर चड्ढा की फिल्म ब्राइड एंड प्रिज्युडिस में मेघना ने अपने शास्त्रीय प्रशिक्षण और सहज कॉमिक टाइमिंग को एक साथ लाकर एक आनंदमय प्रदर्शन का निर्माण किया। कला मेघना के जीन में है। उनके पिता, स्वर्गीय केशव कोठारी, अपने आप में एक तालवादक और नर्तक थे, लेकिन संगीत नाटक अकादमी के सचिव के रूप में अपने अग्रणी काम के लिए जाने जाते हैं। उनके अधीन भारतीय संस्कृति देश के सर्वश्रेष्ठ निर्यातों में से एक बन गई। उनकी माँ, पद्मश्री रीता गांगुली, बेगम अख्तर की पसंदीदा शिष्या थीं। वह गजल के भारत के बेहतरीन जीवित प्रतिपादकों में से एक हैं, और बेगम अख्तर की विरासत को जीवित रखने के लिए अथक प्रयास करती हैं। आज मेघना ग्रेटर नोएडा के कलाधाम में रहती हैं और बजतस |सज ब्यदमउं नाम से एक फिल्म मेकिंग कोर्स को कोऑर्डिनेट करती हैं।



Set Execution & Stage Craft : Sagnik Chakraborty

Sagnik is a multi-disciplinary person. He graduated from National School of Drama in 2017 with a specialization in scenic design and direction. He is a musician, singer, musical instrument maker, production designer. He participated in the UNESCO Chair on Theatre in Education's "Asian Traditional Theatre Workshop" at Central Academy of Drama, China. At present he is an apprentice fellow at National School of Drama. He has also Participated in the Student Exchange program between the Royal Academy of Dramatic Art (RADA), London and the National School of Drama, New Delhi.



साग्निक चक्रवर्ती

साग्निक एक बहु-अनुशासनिक व्यक्ति हैं। आपने 2017 डिजाइन विशेषज्ञता के साथ में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक किया। आप एक संगीतकार, गायक, संगीत वाद्य यंत्र निर्माता, प्रोडक्शन डिजाइनर हैं। आपने यूनेस्को चेयर की शिक्षा में रंगमंच के तहत सेंट्रल एकेडमी ऑफ ड्रामा, चीन में एशियाई पारंपरिक थिएटर कार्यशाला में भाग लिया। आपने रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट (रादा), लंदन और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली के बीच छात्र विनिमय कार्यक्रम में भी भाग लिया है।

Assistant Costume Designer : Kanchan Ujjal

Kanchan Ujjal is a graduate of National School of Drama with Design and Direction specialization. Visual art is an area of particular interest to her, In her theatre journey spanning over a two decades and 32 theatre productions she has explored into the disciplines of Costume design, Scenography and Aesthetics of performance. Currently she is working on storytelling through fabrics and weaves.



कंचन उज्जल

कंचन उज्जल डिजाइन और निर्देशन विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक हैं। दृश्य कला उनके लिए विशेष रुचि का क्षेत्र है, दो दशकों और 32 थिएटर प्रस्तुतियों में फैली अपनी थिएटर यात्रा में उन्होंने कॉस्ट्यूम डिजाइन, सीनोग्राफी और प्रदर्शन के सौंदर्यशास्त्र के विषयों में खोजबीन की है। फिलहाल वह फैब्रिक्स और वीव्स के जरिए स्टोरीटेलिंग पर काम कर रही हैं।



Petrishia Melodi Dorcas is an versatile and acclaimed artist who graduated from the National School of Drama Bengaluru centre specialization in acting in the year 2015, later she joined the National school of drama New Delhi with specialization in direction in the year of 2016-2019. She was the founder member of Red Stone collective performance group, Red Stone Collective is an ensemble of professionals engaged in interdisciplinary and multicultural collective space. Her area of interest is devising interdisciplinary mediums in theatre performance and deeply interested in performance as a research model. Her persistent passion and zeal towards the theatre arts from her childhood made her to pursue theatre arts as her career after her initial under graduation in literature. She has worked with international Projects including Daughters Opera in India, Seni Tiga B in Malaysia (Online), and Farm Lab Exhibition in Tokyo, Japan. She has directed many renowned theatre plays such as BEHIND THE BORDERS, UNTOLD STORIES, NILAM, DEAD CAN BREATHE etc. In which TO YOU FROM ME gained popularity for its intense Performance and fine direction. She has acted and did technical coordination in more than 70 theatre productions and has conducted several workshops on Theatre and movements in all over India. She has been active in theatre for more than a decade and collaborated with many artists in all the aspects of theatre making.



पी. मेलोडी डोरकास

पेट्रिशिया मेलोडी डोरकास एक बहुमुखी और प्रशंसित कलाकार हैं, जिन्होंने वर्ष 2015 में अभिनय में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय बेंगलुरु केंद्र विशेषज्ञता से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, बाद में वह 2016–2019 के वर्ष में निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली में शामिल हुईं। वह रेड स्टोन सामूहिक प्रदर्शन समूह की संस्थापक सदस्य थीं, रेड स्टोन कलेक्टिव अंतःविषय और बहुसांस्कृतिक सामूहिक स्थान में लगे पेशेवरों का एक समूह है।

उनकी रुचि का क्षेत्र थिएटर प्रदर्शन में अंतःविषय माध्यमों को तैयार करना और एक शोध मॉडल के रूप में प्रदर्शन में गहरी दिलचस्पी है। बचपन से ही रंगमंच कलाओं के प्रति उनकी लगातार लगन और उत्साह ने उन्हें साहित्य में प्रारंभिक स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद अपने करियर के रूप में रंगमंच कलाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने भारत में डॉटर्स ओपेरा, मलेशिया में सेनी टिगा बी (ऑनलाइन), और टोक्यो, जापान में फार्म लैब प्रदर्शनी सहित अंतराष्ट्रीय परियोजनाओं के साथ काम किया है।

उन्होंने कई प्रसिद्ध थिएटर नाटकों जैसे कि बिहाइंड द बॉर्डर्स, अनटोल्ड स्टोरीज, नीलम, डेड कैन ब्रीद आदि का निर्देशन किया है, जिसमें टू यू फ्रॉम मी ने अपने गहन प्रदर्शन और बेहतरीन निर्देशन के लिए लोकप्रियता हासिल की।

उन्होंने 70 से अधिक थिएटर प्रस्तुतियों में अभिनय किया और तकनीकी समन्वय किया और पूरे भारत में थिएटर और आंदोलनों पर कई कार्यशालाएँ आयोजित कीं। वह एक दशक से अधिक समय से रंगमंच में सक्रिय हैं और उन्होंने रंगमंच निर्माण के सभी पहलुओं में कई कलाकारों के साथ सहयोग किया है।

Lighting Assistant : Tamilarasi R

Tamilarasi is an alumna of the National School of Drama, graduated with a specialisation in design and direction with a special interest in writing, directing and light designing. Her professional theatre career began in 2013 in chennai as an actor. She has worked with children in chennai teaching them games, movement and language for about 5 years. She is interested in exploring theatre as a medium of expressing the self.

तमिलरसी

तमिलरसी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र हैं, जिन्होंने लेखन, निर्देशन और प्रकाश डिजाइनिंग में विशेष रुचि के साथ डिजाइन और निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ स्नातक किया है। उनका पेशेवर थिएटर करियर 2013 में एक अभिनेता के रूप में चेन्नई में शुरू हुआ। उन्होंने लगभग 5 वर्षों तक चेन्नई में बच्चों के साथ खेल, चाल और भाषा सिखाने का काम किया है। वह रंगमंच को स्वयं को अभिव्यक्त करने के माध्यम के रूप में तलाशने में रुचि रखती हैं।



Rasaswadan

Dance and Music Appreciation Course towards recreating classical theatre 28th Aug. - 01st Sep. 2019, Designed by Vidushi Rita Ganguly (Padmashree). There is no word in the history of Indian aesthetics which has acquired a greater significance than Rasa. To go into the entire idealization or denigration of rasa, as done over many centuries, would need a separate volume. Here, I merely wish to recapitulate the concept as stated by Bharata muni along with the four classical interpretations and conclude with some comments on catharsis and rasa from the standpoint of comparison. From vedic to classical Sanskrit usage, rasa has had two primary meanings. Literally it means juice, or fluid. The secondary meaning is an extract. In ayurvedic terminology, the word rasa was used to denote the vital juice that the digestive system extracts from food and which is later converted into blood, flesh, marrow, fat and sperm.

रसास्वादन

भारतीय सौंदर्यशास्त्र के इतिहास में ऐसा कोई शब्द नहीं है जिसे रस से ज्यादा महत्व मिला हो। कई शताब्दियों में किए गए रस के महिमामंडन या अवमानना को समझने के लिए एक अलग वॉल्यूम की आवश्यकता होगी। यहाँ, मैं केवल चार शास्त्रीय व्याख्याओं के साथ भरतमुनि की अवधारणा को फिर से समझ तुलनात्मक दृष्टि से रेचन और रस पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहती हूँ। वैदिक से लेकर शास्त्रीय संस्कृत के प्रयोग तक रस के दो प्राथमिक अर्थ हैं। शब्दसः इसका अर्थ है आसव या कोई तरल पदार्थ। इसका दूसरा अर्थ अर्क या सार, निचोड़ या सत्त है। आयुर्वेद की शब्दावली में, रस शब्द का उपयोग उस महत्वपूर्ण तरल पदार्थ के बारे में बताने के लिए किया गया था, जो शरीर का पाचन तंत्र भोजन से निकालता है और जो बाद में रक्त, मांस, मज्जा, वसा और शुक्राणु में बदल जाता है।



GREAT GURUS,
WHO PERFORMED IN RASASWADAN



SHUBHA MUDGAL



GURU PRERANA SHRIMALI



O S ARUN



GURU RAMA VIDYANATHAN



USTAD FAIYAZ WASIFUDDIN DAGAR



PANDIT BISWAJIT ROY CHOWDHURY



VIDUSHI SARASWATI RAJGOPALAN

SPEECH, VOCAL &
MUSIC CONTRIBUTION



Nat	Samyak Wanker
Nati	Yamini Sahoo/ Mrunal
Bheem	Hemant Kumar
Hidimbba	Prarthana Chettri/ Anita Bitalu
Dropadi	Mallika Lokhande
Hidimb and Kichak	Manjunatha. H
Ghatotkach	Unnimaya . P
Lakadbagha	Kunal Bhange
Kunti	Sangita Sarkar/ Muskan kosta
Yudhishtir	Sumit jee
Duryodhana	Lod Akash / Sukhpreet Singh
Dushasana	Vipin Yadav
Dhritarashtra	Athul . M
Gandhari	Mrunal
Hanuman	Gokul Mipun
Barbarik	Garima Singh
Sudeshna	Bani Saikia / Pragati Anil Shinde
Krishna	Sukhpreet Singh / Lod Akash
Arjun	Amit Kumar Kushwaha
Nakul	Devyansh Gautam
Sahadev	
Shiv -	

नट
 नटी
 भीम—
 हिडिंबा
 द्रौपदी
 हिडिम्ब और कीचक
 घटोत्कच
 लकड़बघा
 कुंती
 युधिष्ठिर
 दुर्योधन
 दुशासन
 धृतराष्ट्र
 गांधारी
 हनुमान
 बर्बरीक
 सुदेशना
 कृष्णा
 अर्जुन
 नकुल
 सहदेव
 शिव

सम्यक अनिरुद्ध वानकर
 यामिनी साहू / मृणाल
 हेमंत कुमार
 प्रार्थना क्षेत्री / अनीता बिटालू
 मल्लिका लोखंडे
 मंजूनाथ. एच
 उन्नीमाया. पी
 कुणाल भांगे
 संगीता सरकार / मुस्कान कोस्टा
 सुमित जी
 लोद आकाश / सुखप्रीत सिंह
 विपिन यादव
 अतुल. एम
 मृणाल
 गोकुल मिपुन
 गरिमा सिंह
 बानी सैकिया / प्रगति अनिल शिंदे
 सुखप्रीत सिंह / लोद आकाश
 अमित कुमार कुशवाहा
 देवांश गौतम

 हिमांशु श्रीवास्तव

Guest Artist:-

1. Suraj Kumar Shaw
2. Tanwinder Singh Raghav
3. Neeraj Bandooni
4. Shivam
5. Devyansh Gautam
6. Amit Kumar Kushwaha
7. Sonu Kumar Rajak
8. Sujeet Kumar
9. Siddharth Joshi
10. Zubair Ahmad Naik

अतिथि कलाकार रु—

1. सूरज कुमार शॉ
2. तनवींदर सिंह राघव
3. नीरज बंदूनी
4. शिवम
5. देवांश गौतम
6. अमित कुमार कुशवाहा
7. सोनू कुमार राजक
8. सुजीत कुमार
9. सिद्धार्थ जोशी
10. जुबैर अहमद नाइक



Assistant director
Playwright
Light designer
Assistant light designer
Costume designer
Voice and speech Trainer
Chief Assistant costume designer
Assistant costume designer
Music Arranger
Live music
Music Execution
Singer

Veena
Sehnai
Assistant set designer
Backstage and set coordinator
Makeup coordinator
Stage manager

Meghna Kothari
Asif Ali
Souti Chakraborty
Tamilarasi R.
Dolly Ahluwalia Tiwari
Sameep Singh
Kanchan Ujjal
Salma Dandin, Athul . M
kajal Ghosh
Vetri Bhupati, Sagnik Chakrabarty
P. Melodi Dorcas
Shubha Mudgal, Hariharan, O S
Arun, Rita Ganguly Kothari
Saraswati Raj Gopalan
Rajendra Prassanna
Sagnik Chakrabarty
Vipin Yadav
Mrunal
Sangita Sarkar

सहायक निर्देशक
लेखक
लाइट डिजाइनर
सहायक प्रकाश डिजाइनर
कॉस्ट्यूम डिजाइनर
वॉइस एंड स्पीच ट्रेनर
मुख्य सहायक कॉस्ट्यूम डिजाइनर
सहायक कॉस्ट्यूम डिजाइनर
म्यूजिक अरेंजर
लाइव संगीत
संगीत संचालक
गायिका

वीणा
सहनाई
सहायक सेट डिजाइनर
मंच के पीछे और सेट समन्वयक
मेकअप समन्वयक
मंच प्रबंधक

मेघना कोठारी
आसिफ अली हैदर खान
सौती चक्रवर्ती
तमिलरसी
डॉली अहलूवालिया
समीप सिंह
कंचन उज्जल
सलमान डांडिन, अथुल। एम
काजल घोष
वेत्री भूपति, सग्निक चक्रवर्ती
मेलडी डोरकास
शुभा मुद्गल, हरिहरन, ओ एस अरुण, रीता
गांगुली कोठारी
सरस्वती राज गोपालन
राजेंद्र प्रसन्ना
साग्निक चक्रवर्ती
विपिन यादव
मृणाल
संगीता सरकार



PRODUCTION Credits

ACTING

SECOND YEAR STUDENTS 2023



Aditya Shastri



Amaresh Kumar



Anita Bitalu



Bani Saikia



Garima Singh



Gokul Mipun



Hament Kumar



Khurshed Alam



Kunal Bhange



Lod Akash



Lokhande Mallika Ashok



Manjunatha H



Mrunal Wankhede



Muskan Kosta



Pragati Anil Shinde



Prarthana Chettri



Samyak Wankar



Sangita Sarkar



Sukhpreet Singh



Sumit Jee



Unnimaya Pullangottillam



Vipin Yadav



Yamini Sahoo

DESIGN
&
DIRECTION



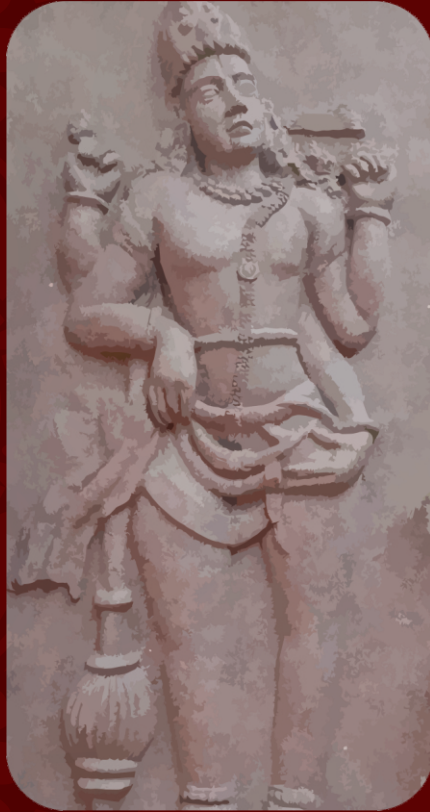
Athul M



Salma Dandin



Shivangi Nigam



NATIONAL SCHOOL OF DRAMA